

ईसाई मिशनरीयों का आगमन एवं गतिविधि : ऐतिहासिक अध्ययन (ई.सन 1880 से ई.सन् 1980 तक म.प्र. के बैतूल जिले के संदर्भ में)

डॉ. जैमिनी खानवे

इंदिरा प्रियदर्शिनी महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

सारांश

द इवेंजलिकल नेशनल मिशनरी सोसायटी ऑफ स्वीडन का आरंभ 01 मई 1856 को मुख्यतः इसाई धर्म के धार्मिक प्रचार-प्रसार के लिए किया गया।¹ इस मिशन का संबंध भारत में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के मध्य कार्यरत मिशन फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैंड मिशन से था। यह संस्था भारत में इसाई धर्म के प्रचार के लिये कार्य करती थी। मिशन का कार्य क्षेत्र प्रायः आदिवासी, जनजाति बाहुल्य जिले व क्षेत्र थे, जिससे हिन्दुओं को इसाई धर्म में धर्मान्तरण में मिशनरियों को सुविधा हो सके। मिशनरी के द्वारा इसाई धर्म के प्रचार हेतु अन्य देशों से आये मिशनरीयों ने इसाई धर्म के प्रचार व प्रसार हेतु जिस तरह से कार्य किया एवं धर्मान्तरण का अपना लक्ष्य प्राप्त किया, यह षोध का विषय है। सुदूर क्षेत्रों में निवास, भाषा की अज्ञानता, विपरीत जलवायु में कार्य करना और धर्मान्तरण हेतु आवश्यक पृष्ठभूमि का निर्माण मिशनरीयों का मुख्य कार्य रहा है। स्वीडिश मिशन या गोंडी मिशन का लक्ष्य था कि आदिवासी, जनजाति गोंडों के मध्य प्रचार कार्य हो। बैतूल में वर्ष 1880 ईसवी में पी. कार्लसन ने प्रवेश किया था और धर्मान्तरण एवं इसाई धर्म का प्रचार का कार्य किया। बैतूल जिले में इसाई धर्म का प्रादुर्भाव ब्रिटिश शासन के समय हुआ।

षोध संकेत (की वर्ड) – इवेंजलिकल लूथरन चर्च, इसाई धर्म, मिशनरी, सु-समाचार प्रचारक, बपतिस्मा

प्रस्तावना

सन् सोलहवीं शताब्दी में भारतीय इतिहास को जहाँ मुगल शासन ने प्रभावित किया वहीं उन्सवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही भारतीय इतिहास में शासन व्यवस्था के साथ-साथ भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में इसाई मिशनरी सक्रिय रही। फादर ऑफ मिशनरी कैरी विलियम्स के अनुसार-मिशनरी का अर्थ है, धार्मिक शिक्षा देने के लिए ईश्वर द्वारा भेजा गया दूत। भारत में इसाई मिशनरियों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य धर्म परिवर्तन करना था। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि, इसाई धर्म एक प्रचारक धर्म है। अतः भारत में इसाई मिशनरी अपने स्वधर्म की स्थापना को लेकर आये। ये मिशनरी प्रायः ऐसे स्थानों को लक्षित करते थे जहाँ धार्मिक विष्वास करने वालों में कमी थी। उन्होंने विशेषकर जनजातियों को अपना लक्ष्य बनाया था। आदिवासी क्षेत्र बैतूल जिला सेन्द्रल प्रोविसेस के जिलों में से एक था जो नए प्रांत के ब्रिटिश डिस्ट्रिक्ट्स कहे जाते थे। यहाँ के मूलनिवासी आदिवासी थे जो पिछड़े व षोषित वर्ग के अन्तर्गत आते थे। शिक्षा का पूर्णतः अभाव था तात्कालीन शासन के द्वारा इन वर्ग विशेष की उन्नति के लिये कोई कार्यक्रम लागू नहीं किये जा रहे थे। अतः ऐसी विपरीत परिस्थितियों मिशनरियों के लिये अनुकूल बनी एवं बैतूल जिले में मिशन कार्य आरंभ किया।

षोध का उद्देश्य

प्रस्तुत षोध का उद्देश्य बैतूल जिले में मिशनरी आगमन के ऐतिहासिक कारणों का पता लगाना है। अनुसूचित जन जाति के मध्य स्वीडिश इसाई मिशनरी जो कालान्तर में इवेंजलिकल लूथरन चर्च के नाम से प्रचलित हुई, के मिशनरियों द्वारा इसाई धर्म के प्रचार व प्रसार हेतु मिशन केन्द्रों की स्थापना हेतु किये गये कार्यों का अध्ययन करना मात्र है।

विदेशी मिशनरियों का भारत के म.प्र. के पिछड़े जिले बैतूल में आगमन, बैतूल की प्रतिकूल जलवायु का प्रभाव, स्थानीय भाषा की अज्ञानता, स्थानीय खानपान में भिन्नता, स्थानीय परिवेश से असमानता होने के पश्चात भी स्वीडन जैसे देश से आकर मिशनरियों ने स्थानीय स्तर पर मिशनरीयों को लक्ष्य प्राप्ति हेतु तैयार किया और मिशन केन्द्रों की स्थापना की यह षोध का उद्देश्य है।

षोध प्रविधि

प्राथमिक स्रोत :

- बैतूल व मिशन के मुख्य कार्यालय छिन्दवाड़ा में उपलब्ध विभिन्न पंजीयों का अवलोकन
- बैतूल जिले में स्थापित विभिन्न चर्च में उपलब्ध अभिलेख
- बैतूल का जिला गजेटियर

- बैतूल और मध्यप्रदेश का जनगणना प्रतिवेदन।
- स्थानीय व मुख्य कार्यालय में उपलब्ध मिशन का वार्षिक प्रतिवेदन
- इसाई समाज के व्यक्तियों से साक्षात्कार

द्वितीयक स्रोत : विभिन्न पुस्तकें, गजेटियर, षोथ पत्र, मिशन के पत्र-पत्रिका, अतः अध्ययन में ऐतिहासिक विधि एवं समीक्षात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

षोथ परिसीमन

षोथ क्षेत्र भारत के वर्तमान मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के संदर्भ में है। इस हेतु बैतूल जिले में मिशन कार्य के लिए आये हुए मिशनरियों का आगमन एवं उनके द्वारा किये गए मिशन कार्य का ही अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत षोथ बैतूल जिले में ईसाई मिशनरियों की वर्ष 1880 से 1980 तक की मिशनरियों के क्रियाकलाप पर आधारित है।

आलेख

बैतूल जिला वर्ष 1861 में सेन्द्रल प्रोविंसेस का एक जिला था, जिसे तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने गठन किया था जिसमें 18 जिले सम्मिलित थे, बैतूल उन 18 जिलों में से एक था। वर्तमान में बैतूल जिला, भारत के मध्यप्रदेश राज्य के सतपुड़ा पठार पर 21°, 22' एवं 20°, 24' उत्तरी अक्षांस तथा 77°, 04' एवं 78°, 33' पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है। प्राकृतिक रूप से बैतूल जिला सतपुड़ा पर्वत श्रेणी का सघन वन क्षेत्र है। बैतूल जिले की जलवायु गर्म है एवं वर्षा ऋतु में ही औसत वर्षा होती है।

तालिका क्रमांक- 1 बैतूल जिले की जनसंख्या ²

वर्ष	कुल जनसंख्या	अनु. जनजाति की संख्या	वर्ष	कुल जनसंख्या	अनु. जनजाति की संख्या
1881	304905	.	1931	406253	121883
1891	323196	.	1941	438342	168299
1901	287807	.	1951	451655	.
1911	390386	.	1961	560412	137456
1921	363737	.	1971	.	.

उपरोक्त जनसंख्या तालिका से स्पष्ट है कि, महामारी एवं अन्य बिमारियों के कारण जनसंख्या वृद्धि में कमी परिलक्षित होती है। उक्त वर्णित तालिका से यह दृष्टिगोचर होता है कि, वर्ष 1931 में अनुसूचित जनजाति कुल जनसंख्या का 30.02 प्रतिषत थी वहीं वर्ष 1941 में यह कुल जनसंख्या का 38.39 प्रतिषत रही। जनजाति की यह जनसंख्या मिशनरियों को आकृष्ट करने में सहायक सिद्ध होती है।

तालिका क्रमांक- 2 बैतूल जिले की जातिवार जनसंख्या ³

वर्ष	कुल जनसंख्या	गोंड जनजाति की संख्या	कोरकू जनजाति की संख्या	इसाई की संख्या
1881	304905	87128	.	.
1891	.	.	.	34
1901	.	.	23,868	417
1941	438342	117199	42,455	.
1951	.	.	54,253	.
1961	560412	1,21,051	.	.

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि, बैतूल जिले में जनजाति गोंड एवं जनजाति कोरकू की जनसंख्या बाहुल्यता में है। गोंड व कोरकू जनजातियों के मध्य व्याप्त अपिक्षा, शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं में कमी, स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं का अभाव, यातायात के साधनों की न्यूनता, भौगोलिक परिस्थितियों आदि विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक कारणों ने बैतूल जिले को मिशन कार्य के लिये उपयुक्त स्थान के रूप में मिशनरियों को चयन करने में सहायता की, अतः मिशनरियों को बैतूल जिले में अपेक्षित परिणाम प्राप्त होने की संभावना प्रबल परिलक्षित हुई, फलस्वरूप मिशनरियों ने बैतूल जिले को मिशन कार्य हेतु लक्ष्य बनाया।

द इवेंजिलिकल नेषनल मिशनरी सोसायटी ऑफ स्वीडन के स्वीडिश मिशनरियों का प्रथम दल 14 दिसम्बर 1877 ईसवी को भारत के मुंबई पहुंचा, जहां इनका स्वागत स्कॉटिश चर्च द्वारा नागपुर में संचालित हिस्लाप कॉलेज के शिक्षक डी. नारफोर्ड के द्वारा किया गया। नारफोर्ड को उनकी सोसायटी के द्वारा मध्यप्रांत में मिशन की स्थापना हेतु चयनित क्षेत्र छिन्दवाड़ा ले जाने हेतु नियुक्त किया गया था। इस स्वीडिश मिशनरी दल में रेव. ए. गुस्ताव डेनियलसन इस दल का नेतृत्व कर रहे थे। सन् 1878 ईसवी में रेव. ई. एन. लुण्डबर्ग एवं कार्लसन छिन्दवाड़ा पहुंचे जहां से इन्हें सन् 1880 ईसवी में बैतूल पहुंचा दिया गया। इस तरह बैतूल जिले के प्रथम मिशनरी के रूप में उक्त दोनों मिशनरियों का नाम अंकित है।⁴

वर्ष 1884 ईसवी में स्टॉकहोम से रेव. आइवर छिन्दवाड़ा पहुंचे, जहाँ से इन्हें मिशन के कार्य को गति देने हेतु बैतूल जाने का आदेश प्राप्त हुआ। पीछे ही इस मिशन के मिशनरियों ने बैतूल जिले के नीमपानी और बोरदेही ग्राम में मिशन का केन्द्र स्थापित किया। वर्ष 1894 ईसवी में मिशन के कार्य में वृद्धि करते हुए बैतूल जिले के अन्य ग्राम जैसे— कोंडार तथा चिचोली में मिशन कार्य आरंभ किया गया। स्काटिश फ्री चर्च मिशन के मिशनरी रेव. डावसन की मृत्यु उपरांत स्काटिश चर्च मिशन नेतृत्व हीन हो गया परिणामस्वरूप इस स्काटिश चर्च का संपूर्ण कार्यभार स्वीडिश मिशन को सौंप दिया गया। पीछे ही रेव. डेनियलसन ने मध्यप्रांत में स्वीडिश मिशन का संपूर्ण प्रभार अपने हाथ में ले लिया और वे अपनी मृत्यु पर्यन्त सन् 1926 तक मिशनरी के रूप में सक्रिय रहे। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक मध्यप्रांत में स्वीडिश मिशन के गतिविधियों के संचालन का क्षेत्र छिन्दवाड़ा और बैतूल जिले में था। इस तरह हम देखते हैं कि, द इवेंजिलिकल नेषनल सोसायटी ऑफ स्टाकहोम और स्वीडिश मिशन बैतूल जिले में सक्रिय थी। बैतूल जिले में स्वीडिश मिशन की स्थापना के संबद्ध में प्रसिद्ध महिला मिशनरी लिन्दबर्ग लिखती है : “सन् 1877 ईसवी में हमारे इंडिया मिशन का कार्य आरंभ हुआ डॉक्टर ए.जी. दानियलसन 28 दिसंबर को छिन्दवाड़ा पहुंचे, जो पूर्व से ही स्कॉटिश चर्च का मिशन केन्द्र था।”⁵

वर्ष 1886 ईसवी में फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड ने छिन्दवाड़ा क्षेत्र में विद्यमान अपनी समस्त संपत्ति का स्वामित्व स्वीडिश मिशन को प्रदान कर इस क्षेत्र का सदैव के लिये परित्याग कर दिया, अतः इस उत्तराधिकारी संस्था ने अतिपीछे छिन्दवाड़ा को मिशन केन्द्र के रूप में संगठित कर छिन्दवाड़ा को अपना मुख्यालय बना लिया। इस दल ने बैतूल की भौगोलिक, ऐतिहासिक स्थिति का अध्ययन कर स्वीडिश मिशन की स्थापना व मिशनरी कार्य हेतु मध्यप्रांत के छिन्दवाड़ा के नजदीकी जिले बैतूल को चयनित किया।

वर्ष 1877 में रेव. एन. ई. लुण्डबर्ग एवं पी. कार्लसन, स्वीडिश मिशन में मिशनरी के रूप में छिन्दवाड़ा पहुंचे। वर्ष 1877 में मिशन के निर्देश पर व मिशन का कार्य करने के उद्देश्य से एन.ई. लुण्डबर्ग और पी. कार्लसन 1877 में बैतूल पहुंचे।

वर्ष 1884 में स्कॉटहोम के रेव. ईवर छिन्दवाड़ा पहुंचे और पीछे ही वह बैतूल के नीमपानी और बोरदेही में मिशन केन्द्र की स्थापना की गई किन्तु इनका मुख्यालय छिन्दवाड़ा ही रहा। वर्ष 1894 में मिशन ने अपने कार्यक्षेत्र में वृद्धि करते हुये बैतूल जिले के दो अन्य पिछड़े क्षेत्र कोंडार व चिचोली में मिशन केन्द्र की स्थापना की। रेव. डावसन की मृत्यु के पश्चात स्वीडिश मिशन का संपूर्ण कार्यभार सन् 1926 में मृत्यु पर्यन्त मिशनरी डेनियलसन संभालते रहे।

बैतूल क्षेत्र मिशन स्टेपन की स्थापना के पश्चात स्वीडिश मिशन के समक्ष एक प्रमुख समस्या मिशनरियों तथा देशी कार्यकर्ताओं के निवास और मिशन कार्य के यथोचित संचालनार्थ नवनिर्माण की थी।

बैतूल में सन् 1880 में मिशन स्टेपन के खुलने के साथ ही समीपवर्ती स्थानों में इसाई धर्म का प्रचार कार्य आरंभ कर धर्मान्तरण का कार्य आरंभ किया गया। सन् 1881 से कार्लसन साहब अपने कैम्प के समय कोंडार का दौरा करने लग गये थे। कार्य की संभावना एवं गोंड जन-जाति के मध्य वांछित प्रतिफल की आशा में सन् 1884 से कोंडार एक लक्ष्य स्थान के रूप में सुनिश्चित कर लिया गया था। इसाई मिशनरी को कलिसिया भी कहा जाता है।

एक अन्य मिशनरी रेन्सा, जो सन 1888 में भारत आये और अगले वर्ष ही 1890 में बैतूल पहुँचे। कोंडार में आपका स्थाई निवास सन 1894 से प्रारंभ हुआ। दो वर्ष पूर्व आपका विवाह जेरथुद फ्रीज से हुआ था, अगले वर्ष आपकी बहिन मिस लीना रेन्सा भी सागर से कोंडार आ गई। कोंडार के पुराने प्रचारकों में श्री नत्थूलाल थे, जिनकी पत्नी खेमी बाई प्रचारिका का कार्य करती थी। अन्य प्रचारिकाओं में रतनिया, हन्ना और पार्वती थी। ये शिक्षिका का भी कार्य करती थी। हन्ना का विवाह पीटर कम्पाउन्डर से हुआ था। नत्थूलाल का सहयोगी श्री कालूराम था, जो कोंडार में शिक्षक भी था। प्रचारक नामान ने इसाई धर्म ग्रहण कर बपतिस्मा ले लिया।⁶

नथानिएल आरेन कोंडार के एक मिशनरी थे, जो मिशनरी रेन्सा के साथ वर्ष 1905 से ही कोंडार में कार्य कर रहे थे। नथानिएल आरेन की मृत्यु 27 अक्टूबर 1906 में हो गई। रेन्सा भी दीर्घजीवी न हो सके और सन 1909 में इनकी भी मृत्यु हो गई। उनकी धर्मपत्नि श्रीमति जेरथुद रेन्सा 17 वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद स्वदेश लौट गई।

कोंडार में कार्यारंभ के समय से ही मिशनरी रेन्सा और भारतीय प्रचारक योहन शंकर ने निर्माण कार्य आदि आरंभ किये। योहन शंकर को हिन्दी, गोंडी, भाषाओं की जानकारी थी, जिससे वह हिन्दु, मुसलमान, अनपढ़, आदिवासी के मध्य इसाई धर्म का प्रचार किया करता था और स्थानीय निवासियों को धर्मान्तरित करने लगा। योहन शंकर की मृत्यु वर्ष 1917 में हो गई। मिशनरी आरेन के समय एक नवयुवक कोंडार मंडली में बपतिस्मा द्वारा सम्मिलित हुआ जिसका नाम बाबू गोविंदराव था। बाबू गोविन्दराव के स्थानीय होने, व उसके गोंडी भाषा का ज्ञान, धर्म-ज्ञान, और साहस ने कोंडार मंडली के विकास और धर्मान्तरण में बड़ी सहायता दी। मिशनरी जे० लिन्दवर्ग एवं मिसिस लिन्दबर्ग ने वर्ष 1922 ईसवी से कोंडार के कार्य का उत्तरदायित्व इन्हीं को दिया था। इस काल में अनेक स्थानीय आदिवासी इसाई बने। उनमें से एक हरवाड़ी का गन्नु गोंड भी था। 5 जून 1942 ईसवी में बाबू गोविन्दराव का देहांत ग्राम आमागोहान में हो गया।⁷

मिशनरी आरेन के निधन उपरांत कोंढर का कार्यभार महिला मिशनरी मिस मारग्रीत अन्दरसीन और जरथुद ने संभाला। सन 1913 ईसवी में पक्की दीवारों वाला एक गिरजाघर 1200 रुपये में बनाया गया।⁸

सन 1920 ईसवी में मिस मार्था दालक्विस्ट तथा वर्ष 1921 ईसवी में मिस कैलिन कॉलीसन भारत आई तथा दोनों को कोंढर के कार्य का उत्तरदायित्व सौंपा गया, जिनकी सहायता जे. लिन्दवर्ग वर्ष 1915 तक करते रहे। उनके पश्चात बॉक्सव्लूम ने वर्ष 1930-35 तक की तथा बर्गमैन ने वर्ष 1935 तक फिर एफ. ओ. मोलेन्डर ने 1942 तक मिशन कार्य जारी रखा। सन् 1901 ईसवी में स्वीडिश मिशनरियों को धर्मान्तरित ईसाइयों की सामुहिक आराधना के लिये गिरिजाघर के निर्माण की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः दूसरे स्वीडिश मिशनरी पास्टर एफ. योहन्सन ने जो वर्ष 1901 ईसवी में भारत आये थे, ने मिशनरी पो० कार्लसन की योजना को कार्यरूप देने का विचार किया, किन्तु इसी मध्य वर्ष 1909 ईसवी में मिशनरी पी० कार्लसन का निधन हो गया जिससे बैतूल में मिशनरी कार्य का संपूर्ण दायित्व पास्टर एफ. योहन्सन पर आ गया।⁹ वर्ष 1914 ईसवी में बैतूल का गिरिजाघर प्रारंभ किया गया।¹⁰

स्वीडिश ईसाई मिशन रूपी “कलीसिया” को प्रशासनिक रूप देने के लिये 9 फरवरी 1923 ईसवी को कलीसिया का संविधान बनाने के लिये एक सभा का आयोजन किया गया। इस बैठक में उपस्थित सदस्य निम्न थे—¹¹

सागर से— ई. रमन, हेतुक, हरीसिंग मास्टर, दाउद मिस्त्री

खुरई से— आन्द्रियास और सिबलून

बैतूल से—तोसूस और प्रसाद मिस्त्री

निमपानी से—फ्रांसिस और इमरत लाल

शाहपुर से— मीका जोसफ, योहनस जेम्स, हृदय बाबू

बोरदेही से— इलियाज।

चिचोली से— जे. हेमिल्टन और गोविन्द राव

छिन्दवाड़ा से—पी. के साल्वे, श्री. एस. के साल्वे, आनंदराव, पास्टर सी. जाधव, इम्मानुएल चौधरी, डी. लाल, शांतवन साल्वे

सेजा से— बी. बेत्रमिन, मूसा, निजाम उददीन

अमरवाड़ा से— सी.डी. नन्दी

हरई से— एल. क्रूसो

बिजौरी से— दया

इस बैठक में कलीसिया के विधान का अनुमोदन किया गया। इस गोंडी मिशन का प्रारंभ चूँकि स्वीडिश मिशनरियों के द्वारा किया गया था, अतः इस कलीसिया को स्वीडिश मिशन के नाम से जाना गया। किन्तु बाद में इसे इवेंजिलिकल नेशनल मिशनरी सोसाइटी ऑफ स्टॉकहोम के नाम से जाना जाने लगा। कालांतर में स्वीडिन ने तय किया कि, अब कलीसिया का नाम “इवेंजिलिकल लूथरन चर्च” होगा। कलीसिया की स्थापना के समय कुल सदस्यों की संख्या 1983 थी जिनमें से 891 दृढिकृत सदस्य थे।

इस कलीसिया में प्रेसिडेंट सबसे बड़ा अधिकारी होता था, जो प्रत्येक पाँच वर्ष में चुना जाता था, किन्तु बाद में कुछ प्रशासनिक कारणों के कारण वर्ष 1965 में सिनड सभा में बिशप के पद को प्रेसिडेंट के स्थान पर स्वीकृत किया गया। वर्ष 1969 ईसवी की सिनड में प्रथम बिशप के रूप में स्वीडिश युरोपियन पास्टर रुबीन इस्राएलसन को चुना गया और संस्था को इवेंजिलिकल लूथरन चर्च इन एम.पी.(ई.एल. सी.) के नाम से पुकारा जाने लगा।¹²

तालिका क्रमांक— 3 कलिसिया में नियुक्त बिशप और उनका कार्यकाल निम्न है—¹³

प्रेसिडेंट—बिशप का नाम	कार्यकाल	पद
पी.ई. फोवर्ग	1923-1924	प्रेसिडेंट
जी.ए. ब्यर्क	1924-1927	प्रेसिडेंट
पी.ई. फोबर्ग	1927-1928	प्रेसिडेंट
जी.ए. ब्यर्क	1928-1936	प्रेसिडेंट
आर.आस्पलुन्द	1937-1945	प्रेसिडेंट
ई. रमन	1946-1964	प्रेसिडेंट
श्री रुबीन इस्रायलसन	1965-1968	प्रेसिडेंट
श्री रुबीन इस्रायलसन	1969-1989	बिशप

वर्ष 1942 ई० में इवेंजिलिकल लूथरन चर्च का सरकारी नियमानुसार रजिस्ट्रेशन पंजीयन किया गया। बैतूल जिले में पास्टर पी. कार्लसन के प्रयासों से प्रचार कार्य के अन्य मिशनरी भी निमपानी क्षेत्र में आदिवासी जनजाति (गोंडों) के मध्य इसाई धर्म के प्रचार कार्य में सम्मिलित हो गये।

क्षेत्र में इसाई धर्म के प्रचार कार्य व अन्य धर्म के लोगों को धर्मान्तरण करने हेतु वर्ष 1910 में ग्राम घोड़ा डोंगरी के शिक्षक श्री नाथनिएल व उनकी धर्मपत्नी गुलनारी बाई भी इसाई धर्म के प्रचार प्रसार में संलग्न हो गई थी।

वर्ष 1940-45 में एक महिला मिशनरी डीकोनेस एच. हालबर्ग ने इस क्षेत्र में मिशनरी कार्य और चिकित्सा कार्य किया किन्तु वर्ष 1946 में आप फिनलैण्ड वापस चली गई।

पास्टर एफ.ओ. मोलेन्डर वर्ष 1913 से मिशन कार्य से जुड़े। मिशनरी मोलेन्डर ने वर्ष 1938 तक क्षेत्र में इसाई धर्म के प्रचार कार्य किया, मिशनरी पास्टर ई. घूरफियल ने सपरिवार इस नीमपानी क्षेत्र में प्रचार कार्य किया। श्री बेन्जामिन शिक्षक भी क्षेत्र में इसाई प्रचारक के रूप कार्य किया।¹⁴

पास्टर ए. ईवर ने इसाई धर्मावलंबियों की संख्या में वृद्धि होने पर ग्राम पाढ़र में चर्च को पूर्ण करने का प्रयास आरंभ किया। बढ़ती इसाई समुदाय की वृद्धि को दृष्टिगत रखते हुये वर्ष 1960 में चर्च का नवनिर्माण किया गया व वर्ष 1986 में इसके क्षेत्रफल में वृद्धि की गई।¹⁵

निष्कर्ष

वर्ष 1886 से ही इसाई धर्म प्रचार कार्य विभिन्न कठिनाईयों के फलस्वरूप भी क्षेत्र में फलता-फूलता रहा। नीमपानी, पाढ़र आदि क्षेत्र जहाँ स्वीडिश मिशन ने इसाई धर्म प्रचार कार्य करना आरंभ किया था, यह क्षेत्र गोंडी जनजातीय के निवासियों का बाहुल्य क्षेत्र था। ये आदिवासी अशिक्षित तथा आर्थिक रूप से अत्यंत गरीब थे। वर्ष 1911 की जनसंख्या में गोंडों की संख्या कुल 23 लाख थी जो केवल मध्य प्रांत में निवासरत थे। बैतूल में कुल जनसंख्या का 27.4 प्रतिशत आदिवासी निवास करते थे वहीं बैतूल जिले के इस पाढ़र निमपानी, शाहपुर क्षेत्र में ग्रामीण जनसंख्या के 90 प्रतिशत गोंड निवासरत थे, अतः जनजाति गोंड बाहुल्य क्षेत्र होने से पाढ़र, शाहपुर में स्वीडिश मिशन के इसाई धर्म प्रचार कार्य स्थापित होने लगा।

क्षेत्र में स्वीडिश मिशन की सफलता का दूसरा कारण यह भी था कि, आदिवासी जनजाति के धर्म संबंधी विचार जीववादी थे। यह ऊपरी तरह से हिन्दुत्व के समान प्रतीत होता है। परंतु आदिवासी जनजाति का धर्म, सर्वग्राही हिन्दु धर्म से अनेक महत्वपूर्ण बातों में भिन्न था। उदाहरणार्थ—पुनर्जन्म के बारे में जनजाति गणेश, दुर्गा, विष्णु आदि हिन्दु देवी देवताओं की पूजा ना करके पड़ा-पेन जैसे देव की पूजा करते हैं। जिसके कारण ये हिन्दु धर्म की तरह धार्मिक न होने पाये, जिससे स्वीडिश मिशनरियों को इन्हें अपने इसाई धर्म की ओर आकर्षित व समाहित करने में किसी भी तरह की व्यवहारिक समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।

बैतूल जिले में इसाई मिशनरियों के आगमन एवं विभिन्न स्थानों में उनके द्वारा मिशन केन्द्रों की स्थापना से यह स्पष्ट होता है कि, उन्होंने सर्वप्रथम छिन्दवाड़ा नगर में मिशन केन्द्र की स्थापना की जो कालान्तर में संपूर्ण ई.एल.सी. का मुख्यालय हो गया। स्वीडिश धर्मप्रचारकों ने बैतूल जिले के बैतूल, बोरदेही, नीमपानी, शाहपुर, पाढ़र, आमला, सारणी में कार्यारंभ कर अपने लक्ष्य को पूर्ण करने का प्रयास किया। उन्होंने जिले की आदिवासी जनता के मध्य इसाई धर्म के प्रचार के सर्वप्रमुख अभिप्राय को कभी विस्मृत नहीं होने दिया, अतएव उनके द्वारा कुछ प्रमुख ग्रामों में भी मिशन केन्द्र स्थापित किये गये। बैतूल, चिचोली तथा शाहपुर आदि मिशन स्टेशनों की स्थापना आदिवासी जनजाति के मध्य इसाई धर्म के प्रचार के लिए की गई थी। शाहपुर मिशन केन्द्र की स्थापना धर्मान्तरित इसाईयों को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुये की गई थी, जबकि पाढ़र, नीमपानी मिशन केन्द्र स्वीडिश मिशन की चिकित्सा नीति को कार्यान्वित करने हेतु विकसित किया गया था। बैतूल मिशन केन्द्र का विस्तार शैक्षणिक अभिप्राय से किया गया था। पोष के परिणाम के रूप में हम यह ज्ञात कर पाते हैं कि, मिशन केन्द्र की स्थापना का एकमात्र लक्ष्य धर्मांतरण रहा जिसे और अधिक प्रभावी बनाने व मिशन तक अधिक से अधिक जनसामान्य को आकर्षित करने हेतु शैक्षणिक व स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं के साथ ही अन्य समाजोपयोगी कार्य किये, फलस्वरूप मिशन निरंतर सक्रिय रहा व मिशन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में किंचित भी असफल सिद्ध नहीं हुआ।

उक्त अध्ययन से हम यह भी निष्कर्ष निकालते हैं कि, मिशनरियों के आगमन में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार का मिशन की गतिविधियों से प्रत्यक्ष संबंध स्पष्ट रूप से परिलक्षित नहीं होता है। स्वतंत्रता के पश्चात धर्मांतरण हेतु गठित नियोगी कमीशन की रिपोर्ट ने धर्मांतरण में किंचित रूप से अंकुश लगाया। इस प्रकार मिशनरियों ने बैतूल जिले के विभिन्न स्थानों में पहुँचकर अपनी विभिन्न गतिविधियों द्वारा तत्कालीन समाज के सभी वर्गों को इसाई धर्म की शिक्षा देने और तदन्तर धर्मान्तरण द्वारा चर्च की सदस्य संख्या में वृद्धि करने के लिये अपनी संपूर्ण शक्ति तथा साधन समर्पित कर दिये।

संदर्भ सूची

1. विष्वास एम. के., मिशनरी एक्टिविटी इन सेन्ट्रल प्रोविन्सेस, प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क्रमांक 14
2. रसल आर.वी., सेन्ट्रल प्रोविन्सेस जिला गजेटियर बैतूल, वॉल्यूम. ए, पायोनियर प्रेस, इलाहाबाद, वर्ष 1907
3. श्रीवास्तव पी.एन., बैतूल जिला गजेटियर, गजेटियर संचालनालय, संस्कृति विभाग, म.प्र. भोपाल, वर्ष 1971
4. ई.रमन, कलीसिया का संक्षिप्त इतिहास, ई.एल.सी प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क्र. 12
5. सी. पोलसन, दैन एन्ड नॉउ, ई.एल.सी.प्रकाशन, वर्ष 1960, पृष्ठ क्रमांक 28
6. ई.रमन, कलीसिया का संक्षिप्त इतिहास, ई.एल.सी प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क्र.15
7. सिंग सी.पी., एक पादरी की आत्मकथा, ई.एल.सी प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क्र. 19

8. मिशन संपत्ति विवरण, पंजी क्रमांक-5, पृष्ठ क्रमांक 12
9. ई.रमन, कलीसिया का संक्षिप्त इतिहास, ई.एल.सी प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क. 38
10. बैतूल चर्च में अंकित शिलालेख
11. ई.रमन, कलीसिया का संक्षिप्त इतिहास, ई.एल.सी प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क. 42
12. पास्टर मुंषी, आयु 76 वर्ष, से प्राप्त जानकारी के आधार पर
13. ई.रमन, कलीसिया का संक्षिप्त इतिहास, ई.एल.सी प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क. 38
14. सिंग सी.पी., एक पादरी की आत्म कथा, ई.एल.सी प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क. 32
15. विष्वास एम. के., मिशनरी एक्टिविटी इन सेन्ट्रल प्रोविंसेस, प्रकाशन, वर्ष 1962, पृष्ठ क्रमांक 124